“ढोला – सदिया पुल” : उत्तर-पूर्व के विकास में क्रांति को प्रेरित करेगा

drishtiias.com/hindi/printpdf/new-bridge-will-spur-a-revolution

संदर्भ

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 26 मई को लोहित नदी पर बने देश के सबसे बड़े नदी पुल को राष्ट्र को समर्पित किया| इसकी लम्बाई 9.5 किलोमीटर है| इस पुल का नाम दादासाहेब फाल्के पुरस्कार विजेता असम के महान गायक भूपेन हज़ारिका के नाम पर रखा गया, जिनका जन्म सदिया में ही हुआ था| इस पुल के माध्यम से एक तरफ जहाँ उत्तरी–पूर्वी राज्यों की भौतिक अवसंरचना के साथ-साथ सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा, वहीं दूसरी तरफ, देश की सामरिक स्थिति को मज़बूती मिलेगी| इसके द्वारा यात्रा में लगभग 165 किलोमीटर की दूरी तथा 8 घंटे के समय की बचत होगी|

महत्त्वपूर्ण बिंदु

- इस पुल का निर्माण असम एवं अरुणाचल के मध्य स्थित लोहित नदी पर किया गया है, जोकि ब्रह्मपुत्र की एक सहायक नदी है| यह अरुणाचल के गोगामुख कस्बे में अवस्थित है| इस पुल के साथ-साथ यहाँ एक अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS) एवं एक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (IARC) का भी उद्घाटन किया गया|
- उद्घाटन करते समय प्रधानमंत्री ने उत्तर-पूर्वी राज्यों को “अष्टलक्ष्मी” का नाम दिया तथा इस क्षेत्र के विकास हेतु कनेक्टिविटी पर ज़ोर दिया|
- 21वीं सदी में उत्तर-पूर्वी राज्यों को पंचपथ से जोड़ने की बात कही गई है| ये पंचपथ हैं- राजमार्ग, रेलमार्ग, जलमार्ग, वायुमार्ग तथा सूचना मार्ग| ऐसा हो जाने से उत्तर-पूर्वी राज्य देश के आर्थिक विकास के साथ जुड़ सकेंगे|
- इसके माध्यम से उत्तर-पूर्वी राज्यों को दक्षिण-पूर्वी एशिया के “ट्रेड हब” के रूप में विकसित करने के साथ-साथ टूरिज़्म को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी| अत: इससे क्षेत्र के विकास के साथ-साथ लोगों को रोज़गार के अवसर भी प्राप्त होंगे|
- उत्तर-पूर्वी राज्यों के प्रत्येक कोने को बिजली, सड़क, ऑप्टिकल फाइबर आदि अवसंरचनाओं के माध्यम से जोड़ा जाएगा|
- देखा जाए तो इस पुल का सामरिक महत्त्व भी है क्योंकि यह चीनी हवाई सीमा से महज़ 100 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है| यह सैनिकों की आवाजाही के साथ-साथ सेना से संबंधित सामग्री को लाने-ले जाने में भी मदद करेगा| इसके माध्यम से लगभग 60 टन वज़नी युद्धक टैंकों को भी ले जाया जा सकता है|